ANSWEBOOK

विषय Subject: Hindi

विषय कोड Subject Code: 051

परीक्षा दिनांक / Date Exam: 02 3 23

उत्तर देने का माध्यम
Medium answering the paper: English

प्रश्न पत्र सेट
Set of the question paper: B

2023

ID: 67593
05 HINDI Pkt. 4
3511239

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर निर्धारित मुद्रा
S.K. Neeraj (Lecturer) V.NO. 32051017 Govt. Martand H.S.S. No.3 rewa MOB.9229612008	S. M. MISHRA (M.S.) Govt. H.S.S. Badi Hardi, Rewa (M.P.) No. 32401015, Mob. No. 6261271585

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 1 उत्तर

(i) दत्ताजी राव के यहाँ
(ii) नाभिक
(iii) शब्दालंकार
चार कालों में
कपड़े पहनाती है
(vi) पैसे की

प्रश्न उत्तर

(i) श्रोता
(ii) नौ वर्ष की उम्र
(iii) भूषण
(iv) कागज के पन्ने से
(v) बिड़ला मंदिर
(vi) सरल वाक्य
(vii) मात्रिक

प्रश्न क्र उत्तर

उत्तर

मस्ती का संदेश - रिवंशराय बच्चन
चौपाई छंद - 16 मात्राएँ
(iii) चित्रकार - चितेरा
(iv) सम्पादकीय पृष्ठ - अखबार की अपनी आवाज
(v) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण - भक्तिकाल
(vi) छायावाद के प्रवर्तक क - जयशंकर प्रसाद

क्र.

प्रश्न क्र. 4 उत्तर

(i) ढोल की आवाज
(ii) जयशंकर प्रसाद
(iii) लाल खड़िया चाक
(iv) दो
(v) मुहावरा
(vi) रेडियो नाटकों में पात्रों की पहचान ध्वनि तरंगों के माध्यम से होती है।
(vii) खजूर, अंगूर, खरबूज.

प्रश्न क्र. 5 उत्तर

(i) सत्य
(ii) सत्य
(iii) असत्य
(iv) सत्य
(v) सत्य
(vi) असत्य

प्रश्न क्र. 6 उत्तर   अथवा

लक्षणा शब्द शक्ति :- शब्द की जिस शक्ति से हमें किसी शब्द के प्रचलित या मुख्य अर्थ का बोध न होकर उससे जुड़ा हुआ दूसरे अर्थ का बोध होता है उसे लक्षणा शक्ति कहते हैं। उदाहरण –
वो लड़का गधा है।

प्रश्न क्र.

(2) शेर वनराज कहलाता है।

इस ~~भक्ति~~ शब्द शक्ति से हमें जिस अर्थ का बोध होता है उसे लक्ष्यार्थ अर्थ कहते हैं।

प्रश्न क्र. 7 उत्तर अथवा

~~तकनीकी शब्द~~ :-

राष्ट्रीय भाषा की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(1) राष्ट्रीय भाषा को संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त होती है एवं यह भाषा देश की संपर्क भाषा कहलाती है। देश के बहुत लोग इस भाषा का उपयोग करते है।

(2) राष्ट्रीय भाषा का दायरा बड़ा होता है एवं भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास की प्रेरणाएँ इसी भाषा में होती हैं।

प्रश्न क्र. 8 उत्तर

मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

प्रश्न क्र. 9 उत्तर

कवि ने अपने खेत में शब्द का बीज बोया

प्रश्न क्र.

जिसके कारण उसके कानन रूपी खेत में कविता रूपी फल आने लगे। यह बीज उसने क्षण भर में बो दिया था जिसके द्वारा जो कविता बनी उससे प्राप्त रस हमें जीवन भर मिलेगा।

प्रश्न क्र. 10 उत्तर अथवा

लक्ष्मण जी के लिए संजीवनी बूटी लाने पवनपुत्र हनुमान गए थे। लक्ष्मण जी को शक्तिबाण लगा जिसके कारण वह मूर्छित हो गए। वैद्य ने संजीवनी बूटी लाने के लिए कहा जो हिमालय पर्वत में थी। इसलिए उसके लाने हनुमान जी हिमालय गये थे।

प्रश्न क्र. 11 उत्तर

जेब के भरे होने और मन के खाली होने पर मन के ऊपर बाजार का जादू चढ़ने लगता है। वह अपनी पर्चेजिंग पावर दिखाने लगता है एवं व्यर्थ की फैंसी चीजें खरीदने लगता है। उसे अपने पास चीजों का अभाव महसूस होने लगता है। जेब भरा होने का आशय है कि मनुष्य के पास पैसे होना और मन खाली होने का आशय है कि मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं के बारे में पता न हो। चीजों का अभाव महसूस होने के कारण वह मन बेचैन हो उठता है एवं ईर्ष्यालु हो जाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

मन में बेकारी आ जाती है।

प्रश्न क्र. 12 उत्तर अथवा

महादेवी वर्मा ने स्वयं व भक्तिन के मध्य सेवक-स्वामी के सम्बन्ध को नकारा है। भक्तिन महादेवी के घर नौकरी करने नौकरानी बनकर आयी थी परन्तु महादेवी उसे नौकरानी नहीं मानती थी। भक्तिन तो महादेवी की धूप-छांव की साथी बन गई थी। भक्तिन महादेवी जी के लिए सब कुछ करने को तैयार थे। वह उनके लिए जेल भी जा सकती थी। महादेवी को भक्तिन की कुछ बातें अच्छी नहीं लगती थी जिसके कारण वह कभी-कभी उसे चले जाने को कह दिया करती थी परन्तु भक्तिन हँसकर टाल देती है जिससे यह पता चलता है कि उनके बीच में मालिक-नौकर का संबंध नहीं था।

प्रश्न क्र. 13 उत्तर

लेखक के पिता ने आनंदा को पाठशाला भेजते समय निम्नलिखित शर्तें रखीं -

(i) लेखक को पाठशाला जाने से पहले सुबह 11 बजे तक खेत में काम करना होगा जैसे पानी लगाना आदि।

(ii) पाठशाला से आने के बाद उसे एक घंटे

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

पशुओं को चराना होगा
जिस दिन खेत में ज्यादा काम होगा उस दिन
(3) उसे पाठशाला से छुट्टी लेनी होगी।

प्रश्न क्र. 15 उत्तर अथवा

संदेह अलंकार – जहाँ किसी प्रस्तुत वस्तु को देखकर उसके किसी विशेष गुण या रूप रंग की समानता के कारण यह निश्चय न हो पाए कि वह वही वस्तु है या नहीं वहाँ संदेह अलंकार होता है। इसमें अंत तक हमारा संशय दूर नहीं हो पाता।

उदा:रण –

सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है
कि सारी कि ही नारी है कि नारी ही की सारी है।

प्रश्न क्र. 16 उत्तर

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से महान है – संस्कृत में यह सुक्ति है कि "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" अर्थात जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होते [illegible] यह बात पूरी तरह से सत्य है क्योंकि [illegible] जन्मभूमि के हमारे ऊपर इतने उपकार [illegible] हम उनसे उऋण नहीं हो सकते रवीन्द्रनाथ टैगोर जी इस संदर्भ में कहते है कि यदि मुझे जननी और जन्मभूमि के बदले स्वर्ग की प्राप्ति हो

प्रश्न क्र.

तो मैं स्वर्ग को इंकार कर दूँगा क्योंकि स्वर्ग के वैभव विलास में मेरा मन अटक जायेगा, मैं अपनी उन्नति नहीं कर पाऊँगा जबकि माँ की वाणी से मुझे आगे बढ़नी की उम्मीद मिलेगी। माँ की ~~वाणी~~ गोद में सिर रखकर मनुष्य अपनी सारी समस्याएँ भूल जाता है। एवं जन्मभूमि की गोद मे हमें शीतलता प्राप्त होती है, उसे ने हमेशा पालन-पोषण किया है एवं उसी की कर्मभूमि में हम कर्म करके अच्छे मनुष्य बनते हैं। हम माँ और जन्मभूमि को कितने भी कष्ट देते हैं वह हमसे प्यार ही करती है। इसलिए कहा गया है कि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।

3

प्रश्न क्र. 17 उत्तर अथवा

(क) "हास्य - व्यंग्य का जादू" इस गद्यांश का उचित शीर्षक है।

(ख) नीरस जीवन को हास्य - व्यंग्य सुखद बना देता है

(ग) इस गद्यांश में हास्य - व्यंग्य के जादू के बारे मे बताया गया है। हमारे दुर्भर एव नीरस जीवन जिसमे । संघर्ष, तनाव, घुटन, मुसीबतें आदि हैं, उसे जीने योग्य एव सुखद बनाने के लिए हँसना अति आवश्यक होता है। हास्य के जादू के कारण इसका प्रभाव चारों ओर फैल जाता है।

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्रं 18 उत्तर अथवा

तुलसीदास

(i) रचनाएँ - रामचरितमानस, दोहावली, कवितावली

(ii) भाव पक्ष - कलापक्ष - तुलसीदास जी राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक है। उनके काव्यों मे भक्ति भावना के साथ-साथ समाज सुधार की भावना भी देखने को मिलती है। उनके काव्यों मे लोक कल्याण की भावना है। इनकी भक्ति दास्य भाव की है। इनके आराध्य श्री राम हैं।

तुलसीदास जी की भाषा अवधी एवं ब्रज है। ~~इन~~ इन्होंने दोहा-चौपाई शैली में काव्य रचना की। इनके काव्यों में उपमा, यमक अनुप्रास, आदि अलंकारों को प्रयोग देखने को मिलता है। इन्होंने अपने काव्य में दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छंदों का प्रयोग किया है। इनके काव्यों मे ~~श्र~~ ~~करु~~ करुण रस पाया जाता है।

(iii) साहित्य में स्थान - तुलसीदास जी लोक कवि है। इनकी रचनाओं से जीने की कला सीखी जा सकती है। इनके लिए 'सूर सूर तुलसी ससि' कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ये जननायक कवि थे यद्यपि इन्होंने 'स्वान्तः सुखाय' नाम की काव्य रचना की।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

श्न क्र.

प्रश्न क्र 19 उत्तर अथवा

धर्मवीर भारती

(1) दो रचनाएँ - ' सूरज का सातवा घोड़ा '
' गुनाहों का देवता '

(2) भाषा - शैली - नवीन शिल्प के प्रतिनिधि कवि होने के कारण इन्होंने भावों को व्यक्त करने के लिए किसी विशेष भाषा का प्रयोग नहीं किया है अपितु स्वयं की भाषा का प्रयोग किया। इनकी भाषा में सरलता, सहजता, सजीवता, व आत्मीयता का पुट है एवं इनकी भाषा आम बोलचाल की खड़ी बोली है। इनका भाषा मे अंग्रेजी, देशज, तद्भव, उर्दू एवं संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया है। मुहावरे एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से इनकी भाषा में गतिमयता आ गई है।

~~इनत~~ इन्होंने मनोवैज्ञानिक, चित्रात्मक वर्णनात्मक भावात्मक हास्य व्यंग्यपूर्ण प्रतीकात्मक व आदि भाषा शैलियों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है।

(3) साहित्य में स्थान - धर्मवीर भारती की तीक्ष्ण आधुनिक दृष्टि, स्वच्छन्द प्रवृत्ति एवं व्यक्तिवाद को हिन्दी साहित्य सदैव याद रखेगा। इनको भारत सरकार

MADHYAPRADESH BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

श्न क्र.

द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। नयी कविता के कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्य इनका सदैव ऋणी रहेगा।

प्रश्न क्र 22 उत्तर अथवा

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग - 2 में संकलित 'बादल - राग' से लिया गया है। इसके रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हैं।

B
S
E

प्रसंग - इस पद्यांश में बादलों को क्रांति के रूप में दिखाया गया है और बताया है कि क्रांति रूपी बादल के आने पर कमजोर लोग भी उन्नति की आशा से भर उठते हैं।

व्याख्या - प्रस्तुत पद्यांश में कवि ~~कहता~~ बादलों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे रूप बादल! तुम आकाश में ऐसे मंडराते हो जैसे पवन रूपी सागर में कोई नौका चल रही हो। तुम अस्थिर सुख पर दुख की छाया से प्रतीत होते हो। अर्थात कहने का आशय यह है कि पूँजीपतियों का सुख अस्थिर होता है और क्रांति के होने से उन्हें अपने धन - वैभव के खोने मात्र से डर लगता है जिसके कारण वह क्रांति को दुख की छाया कहते हैं। कवि कहता है कि संसार का हृदय कष्टों के कारण जला हुआ तो हे क्रांतिदूत रूपी बादल!, तुम शोषण से ग्रस्त

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

संसार के ऊपर जल बरसाकर उन्हें शीतलता प्रदान करो एवं उनकी जलन की को दूर करो।
बादलों को संबोधित करके कवि कहता है कि तेरी युद्ध रूपी नौका
बहुत ज्यादा आकांक्षाओं यानि इच्छाओं से भरी हुई है अर्थात शोषित एवं गरीब वर्ग भी अपनी उन्नति एवं विकास की इच्छा तेरी यानि क्रांति के आने से रखते है। तेरी भारी भरकम गर्जना से पृथ्वी के नीचे दबे (सोए) हुए बीज भी जाग उठते है और उनसे अंकुर फूटने लगता है। अर्थात क्रांति की हुंकार से निष्क्रिय एवं कमजोर भी अपने विकास की कामना से भर उठते हैं। ये लोग नए जीवन की आशा से भर उठते हैं एवं अपना सिर उठाकर क्रांति रूपी बादल को बुलाते हैं।

जब भी क्रांति होती है तो निम्न वर्ग के लोगों को उससे हमेशा फायदा होता है।

3

MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र 23 उत्तर

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह-भाग 2 में संकलित 'पहलवान की ढोलक' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक फणीश्वर नाथ रेणु हैं।

प्रसंग → इस गद्यांश में चाँद सिंह को लुट्टन सिंह द्वारा दी गया चुनौती के बारे में बताया गया है।

व्याख्या → इस गद्यांश में बताया गया है कि लुट्टन सिंह ने बिना कुछ सोचे समझे, जवानी की मस्ती और ढोलक की ललकारती हुई आवाज के वशीभूत होकर, श्यामनगर मेले में शेर के बच्चे को दंगल के लिए चुनौती दे दी। बचपन से ही उसे कुश्ती का शौक था इसलिए कुश्ती के दाँव पेंच देखकर उससे रहा नहीं गया दंगल में पहलवानों की

प्रश्न क्र. 14 उत्तर

नए और अप्रत्याशित विषयों के लेखन से छात्रों में निम्नलिखित गुण विकसित होते हैं –

(1) नए विषयों के लेखन से छात्रों को इन विषयों के बारे में सम्यक रूप से जानकारी प्राप्त हो जाती है जिसके द्वारा उनके अंदर ज्ञान बढ़ता है एवं विद्यार्थी ज्ञानी हो जाता है।

न क्र.

(2) विद्यार्थी को अपनी बातों को अच्छी तरह से ~~कहना~~ प्रस्तुत करना आने लगता है जिससे उसका आत्मविश्वास गुण की वृद्धि होती है

विद्यार्थी को लिखने की शैली आने लगती है जिससे वह एक श्रेष्ठ लेखक बन सकता है। उसे विभिन्न विषयों में अपनी रुचि के बारे में ज्ञात हो जाता है।

D
S
E

प्रश्न क्र. 20 उत्तर

गाँधी चौक
सतना
दिनांक - 02-03-2023

सेवा में,
श्रीमान जिलाधीश महोदय
सतना (म. प्र.)

विषय - ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगाने हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,
सविनय नम्र निवेदन है कि मै आपका ध्यान ध्वनि विस्तारक यंत्रों के अधिक उपयोग के कारण होने वाले ध्वनि प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहती हूं। महोदय मेरा नाम निकिता अग्रवाल है। मै कक्षा बारहवी की छात्रा हूँ। मेरी बोर्ड परीक्षाएँ जल्द ही शुरु होने वाली हैं। कक्षा बारहवीं के सभी विद्यार्थी परीक्षाओं की तैयारी मे लगे हुए हैं। हमारे लिए इस समय का सदुपयोग बहुत आवश्यक है। किन्तु कुछ लोग विद्यार्थियों के इस समय के महत्व को न समझते हुए ध्वनि विस्तारक यंत्रों का बहुत अधिक उपयोग कर रहें जिससे हम लोग अपना ध्यान पढाई मे केंद्रित नहीं कर पा रहें हैं। अतः आप से निवेदन है कि जब तक हमारी बोर्ड परीक्षाएँ चल रही हैं तब तक के लिए ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। विश्वास है आप जनहित मे तुरंत कार्य करेंगे।

धन्यवाद
प्रार्थी
निकिता अग्रवाल

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र 2, उत्तर

वृक्षों की उपयोगिता

रूपरेखा –
1. प्रस्तावना
2. वृक्षों की उपयोगिता
3. वृक्षो की कटाई
4. वृक्षारोपण
5. उपसंहार

(1) प्रस्तावना ⇒ वृक्ष मानव जीवन की सबसे बड़ी पूंजी हैं, ईश्वर का दिया हुआ सबसे अच्छा उपहार है। आदिम सभ्यता में रहने वाले मनुष्यों का वृक्षों से गहरा संबंध है। वृक्षों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। हमारे जीवन को बनाए रखने के लिए वृक्षों का रहना अनिवार्य है।

(2) वृक्षों की उपयोगिता – वृक्ष हमारे मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। सभी सभ्यताओं का जन्म वनों की ही गोद में हुआ है। ऋषि मुनियों ने वृक्षों की घनी छाया में बैठकर ज्ञान के बेशकीमती रत्न दिए हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की कृषि वर्षा पर निर्भर होती है। वृक्षों के कारण ही वर्षा होती है तो इससे वृक्षों का महत्व सिद्ध होता है। भारत में तो तुलसी, नीम,

आंवला जैसे वृक्षों की पूजा की जाती है। वृक्षों से हमें बहुत सी औषधियाँ प्राप्त होती हैं। वृक्ष हमें प्राणवायु देते हैं जिसके बिना जीवन संभव नहीं है। वृक्ष धरती की मिट्टी की ऊपरी सतह जो कृषि के लिए आवश्यक है, उसे बचाकर रखते हैं। वृक्षों से प्रदूषण कम होता है। वृक्षों की हरियाली को देखकर मन प्रसन्न होता है।

वृक्ष धरा के भूषण हैं,
करते दूर प्रदूषण हैं॥

बंजर धरती करे पुकार,
बच्चे कम हो वृक्ष हजार॥

BSE

वृक्ष धरती के तापमान को बनाकर रखते हैं जिससे पृथ्वी का तापमान न बहुत ज्यादा अधिक हो और न बहुत कम हो

(5) वृक्षों की कटाई ⇒ आज मनुष्य वृक्षों को काटकर स्वार्थी बन रहा है परन्तु उसे यह ज्ञात नहीं है कि यह कार्य बहुत ही अमंगलकारी है क्योंकि वृक्षों का जीवन तो परोपकार के लिए है। मनुष्य आधुनिक सुख सुविधा के लिए वृक्षों को काटकर उसकी जगह घर, उद्योग-धंधे आदि बनाते जा रहे हैं। वृक्षों की कटाई करके उसकी लकड़ी से फर्नीचर, कागज आदि बना रहा है परन्तु इन सभी कार्यों से प्रकृति एवं पर्यावरण असंतुलित हो रहे हैं। यदि

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

मनुष्य को इन सभी चीजों की आवश्यकता के लिए पेड़ को काटना पड़ रहा है तो उसकी यह जिम्मेदारी है कि वह उससे ज्यादा भी पेड़ लगाए भी।

(5) वृक्षारोपण – वृक्षों की कटाई को रोक-कर अधिक से अधिक पेड़ लगाना ही वृक्षारोपण कहलाता है। वृक्षारोपण आज के भौतिक युग की एक माँग है। पौराणिक दृष्टि से अपने जीवन में पाँच वृक्ष लगाने वाले व्यक्ति को स्वर्ग लाभ होता है, अर्थात वृक्षारोपण करना आज अनिवार्य हो गया है।

(6) उपसंहार – वृक्षों की निरंतर कटाई को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अब वृक्षारोपण करना बहुत आवश्यक हो गया है। सरकार द्वारा इस ओर प्रयास किए जाने चाहिए जिससे हम एक सुखी जीवन आगे जी सकें।

BSE